P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-II* October-2015

गीता में निहित शैक्षिक तत्वों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

हेमलता दादाणो
व्याख्याता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
इजोनियर्स प्वाइन्ट,
खैरथल, अलवर, राजस्थान

सारांश

वैदिक संस्कृति के सागर में रामायण, महाभारत, उपनिषद, गीता जैसे महान ग्रन्थ समाये है। इन महान ग्रन्थो में श्रीमद्भागवत गीता एक ऐसा ग्रन्थ है जिसकी शिक्षा आज के बदलते युग में निश्चित रूप से शिक्षित अपनाकर शिक्षा की वर्तमान समस्याओं का समाधान करने का प्रयास किया जा सकता है। गीता जैसे दिव्य वह रहस्यमय ग्रन्थ की शिक्षाओं को पूर्ण रूप से सामने लाकर आज के कुण्ठाग्रस्त मानव की मानसिक अशांति को निकालकर उसका सकारात्मक विकास किया जा सकता है।

गीता में श्रीकृष्ण नें गुरू के रूप में अर्जुन शिष्य के विषाद को जिस प्रकार दूर करके उसमें कर्तव्य पालन का भाव भरा तथा उसे समाज कल्याण की और प्रेरित किया उसी प्रकार वर्तमान शिक्षा को श्रीकष्ण के संदेशा से प्रेरणा प्राप्त कर अपने स्वरूप को बदलती परिस्थितियों के अनरूप बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। शिक्षक व विद्यार्थी जिस प्रकार मूल्य विहिन होकर अपने पथ से विचलित होते जा रहे है गीता की शिक्षा इनके मूल्यों को पुनः जीवित करके ऊर्जा व ओज का रक्त प्रवाहित कर सकती है,

प्रस्तुत अध्ययन में गीता की शिक्षा के कुछ पहलुओं का प्रकाश में लाकर शिक्षक व छात्र का पथ प्रषित करने का छोटा सा प्रयास किया गया है। इसके माध्यम से शिक्षित वर्ग में कत्तव्य बोध की भावना जाग्रत की जा सकती है।

मुख्य शब्द : गीता– गाया जाने योग्य, शैक्षिक तत्व, कर्त्तव्य पथ, पाठ्यक्रम, मनोवैज्ञानिक, विश्लेषण।

प्रस्तावना

विश्व की सभी संस्कृतियाँ वैदिक संस्कृति की श्रेष्ठता के आगे नतमस्तक है। इसी वैदिक संस्कृति के सागर में रामायण, महाभारत, उपनिषद और गीता जैसे महान ग्रंथ समाये है। श्रीमदभागवत गीता एक ऐसा ग्रंथ है जिसकी शिक्षा आज के बदलते युग में व्यावहारिक ज्ञान देने में सक्षम है।

भारतीय दर्शन समस्त जगत् को सर्वमान्य एकता में बान्धता है वसुधैव कुटुम्बकम् की कल्पना को साकार करता है। भोगवाद एव भौतिकवाद क त्रिशूल से ग्रस्त शिक्षित व्यक्ति को गीता अपनी शिक्षाओ के द्वारा मार्ग प्रशस्त कर नवीन प्रकाश की ओर अग्रसर करती है। यह हमारे अहकार को नष्ट कर ज्योर्तिमय पथ की ओर प्रशस्त करती है।

गीता का अर्थ है– ''गाया जाने वाला''। गीता के माध्यम से श्री कृष्ण जी ने, गाकर विश्व को ज्ञान देने का प्रयास किया है। महाभारत में कुल 18 पर्व है। भीष्म पर्व के अन्तर्गत श्रीमदभागवत गीता 13 वे अध्याय से आरम्भ हो कर 42 वे अध्याय में समाप्त होता है जिसके अन्तर्गत 18 अध्याय तथा लगभग 700 श्लोक है गीता में श्री कृष्ण जी ने महाभारत की रणभूमि में अर्जुन को ज्ञान व कर्म का संदेश दिया था।

गीता में निहित शैक्षिक तत्व

गीता में निहित वे सभी प्रवृत्तियों को इसमें स्थान दिया है, जो किसी ना किसी रूप में शिक्षा छात्रों एव शिक्षकों की शैक्षिक गतिविधिया से सम्बन्धित है। गीता की शिक्षा, शिक्षक एव छात्र की अवधारणा, पाठ्य क्रम एंव योग शिक्षा के अतिरिक्त आध्यात्मिक शिक्षा सम्बंधी प्रवृत्तियो को भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

गीता में वर्णित शिक्षक का स्वरूप व आचार

महाभारत में एकमात्र श्रीकृष्ण को ही एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है जो, ना कभी टूटते है, ना झुकते है, ना जय–पराजय की चिंता करते हे। उनमें अपने पुरूषार्थ कत्तव्य, और नीति के प्रति इतना आत्मविश्वास है।

कि वह अर्जुन को आश्वासन देते है ''मेरी योजना और विश्व–रूप की व्यापकता में भीष्म, द्रोण, दुर्योधन, कर्ण, आदि पहले से ही करे पड है, हे अर्जुन तुम्ह तो केवल निमित्त मात्र बनना है'' इस तरह यहा श्री कृष्ण का स्वरूप जगतगुरू के रूप में परिलक्षित होता है।

गीता की शिक्षा जगत को सबसे बड़ी देन है कि श्री कृष्ण का गुरू के रूप में प्रस्तुत करना और अर्जुन के रूप माध्यम से पथभ्रमित छात्रो का मार्ग प्रशस्त करना। शैक्षिक दृष्टि से श्री कृष्ण का स्वरूप एक ऐसे निर्देशक और गुरू का स्वरूप है जो अपने समय की प्रचलित रूढियो को चुनौतियो के साथ तोड़कर अर्जुन के आत्मविश्वास भरकर कर्म करने की प्रेरणा देते है। श्री कृष्ण स्वय भगवान है फिर भी सारथी बनकर ज्ञान, कर्म व भक्ति का मार्ग दिखाते है।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाव्यजनशलाकया।
चक्षुरून्मीलित येन तस्मै सभी गुरूवैः नम।।

मोह से व्याकुल अर्जुन के रूझान को नष्ट कर सन्मार्ग की ओर प्रवृत करने का श्रेय श्री कृष्ण रूपी गुरू को ही है प्रत्येक व्यक्ति अर्जुन की क्रांति ही कत्तव्य पथ से विचलित है आवश्यकता है तो आज श्रीकृष्ण रूपी शुरू की जो मनुष्या को मोह रूपी व्याधि से मुक्त करे और उनके मिथ्या अंहकार को दूर करे। गीता में गुरू श्री कृष्ण के सिद्धान्त निम्न है (1) आत्मा की अमरता और अखंडता (2) देह की शुद्धता (3) स्वधर्म की अबाध्यता। अगर मनुष्य इन सभी को जान लेता है ता वह इस नश्वर संसार की सभी सच्चाईया से अवगत हो जाता है। गीता में श्री कृष्ण का अस्तित्व एक ऐसे गुरू के रूप में भी दृष्टिगोचर होता है जिसमें स्वय ही गुरू शिष्य अर्जुन को उपदेश देकर ऊझान दूर करते हुए कहते है।

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

इसके साथ ही श्रीकृष्ण अपने शिष्य अर्जुन को कठिनाई के समय भी लक्ष्य को ना छोडकर निरतर कर्म करने की प्ररेणा देते है और उसकी मानसिक दुर्बलता दूर करने का प्रयास करे है श्रीकृष्ण एक मनोवैज्ञानिक शिक्षक की भांति अर्जुन थी मन स्थिति को धैर्यपूर्वक समझते हुए उसकी हर जीवन की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करते है श्री कृष्ण ने इसलिए दो प्रकार के शिष्या अर्न्तमुखी व बर्हीमुखी का वर्णन भी किया है अर्न्तमुखी व्यक्तित्व वालो के लिए झान योग और बर्हीमुखी व्यक्तित्व वालो के लिए कर्मयोग का संदेश दिया है।

गीता के रूप में श्रीकष्ण के रूप में एक आदर्श गुरू के रूप में एक प्रज्ञावान, आत्मविश्वासी, धैर्यवान, सच्चा मनोवैज्ञानिक स्नेहशील, आशावादी, सफल निर्देशक आदि सभी गुणो की अपेक्षाये भी अचेक्षित है वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आज के शिक्षक में श्रीकृष्ण के जसा आत्म विश्वास नही है। वह छात्र को आश्वासन नही दे सका, वह स्वय द्वन्द्व में फंसा है वह स्वय वेतन भोगी कर्मचारी है वह श्री कृष्ण जैसी दिव्यशक्ति, आभा और पुरूषार्थ से वंचित है साथ ही साथ अर्जुन जैसे छात्र भी आज के समय में नही है। गीता के माध्यम से गुरू श्रीकृष्ण मे अनुकरणीय नेतृत्व के साथ–साथ दूरदर्शिता, व्यवहारिकता, और क्रियाशीलता का भी के साथ–साथ दूरदर्शिता, व्यवहारिकता, और क्रियाशीलता का भी अदभुत संगम है उनमें कुशल संप्रेषण शक्ति है इसी कारण कत्तव्य विमुख अर्जुन को भी उन्होने मार्ग दिखा दिया और इसके साथ ही उनमें कुशल प्रबन्धन क्षमता भी है एक कुशल व सफल शिक्षक वही है जो छात्र की आंतरिक व बाहरी क्षमता का सही आंकलन कर श्रीकृष्ण के समान छात्र को शिक्षित कर सके।

गीता में वर्णित छात्र व्यक्तित्व सम्बधित तत्वो का विवेचन

गीता में अर्जुन का स्वरूप छात्र के रूप में हुआ है जो सम्पूर्ण क्षमताओ के होने के बाद भी लौकिक ओर सांसारिक वासनाओ के कारण आत्मविस्मृत और संदेह का शिकार है कुरूक्षेत्र आज के छात्र की कर्मभूमि है अपने आत्मिक और मानसिक दुर्बलता के कारण अर्जुन अपने पथ से भटक रहे हे ऐसे में श्रीकृष्ण रूपी गुरू द्वारा अर्जुन को आशक्तियो को त्यागकर विवेकशील बनते हुए सफलता विफलता को समान समझते हए अपना कर्म करने की प्रेरणा दी गयी और उनकी सभी समस्याओ का समाधान किया गया उन्हे हर कार्य विजय प्राप्त करने के लिए पूर्ण मनोयोग से करने को कहा गया है गीता के अनुसार विद्याथी संयमी, रागद्वेष मुक्त, योगी, सदाचारी होना चाहिये।

गीता में पाठ्यक्रम का स्वरूप

मानव प्रकृति के आधार पर पाठ्यक्रम को तीन भागो में बाटा गया है–

सात्विक पाठ्यक्रम

जिसके अन्तर्गत अंतःकरण की निग्रह इन्द्रियो का दमन और आत्मिक शुद्धि पर बल दिया है।

राजसी पाठ्यक्रम

ऐसे व्यक्तियो के लिए मोह व तृष्णा को दूर कर परमसत्य के दर्शन के लिए मन वाणी से परिशुद्ध मुक्ति मार्ग का पाठ्यक्रम रखा गया है जिसमे युद्धकला प्रशासण, शूरवीरता धैर्य आदि का समावेश रहता है।

तामसी पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम अज्ञानि व्यक्तिया के लिए होता है जो कर्तव्य की और ध्यान नही देते इसमे शरीर केन्द्रीत पाठ्यक्रम खेती, गो–पालन, व्यापार, व्यायाम जैसे विषय आते है।

इनके अतिरिक्त भी गीता के अन्तर्गत भौतिक विज्ञान, रासायन विज्ञान, यान्त्रिकी विज्ञान उद्योग व व्यवसाय का अध्ययन और सैनिक शिक्षा का पाठ्यक्रम देखने को मिलता है। इन पाठ्यक्रमों के लिए प्रश्नोत्तर विधि, करणीय कर्म विधि अनुकरण विधि तर्क, वार्तालाप और समस्या समाधान जैसी प्रत्येक्ष व मौखिक विधिया भी हमे दिखई देती है साथ ही साथ श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये व्याख्यान के अन्तर्गत व्याख्यान विधि भी दृष्टिगोचर होती है।

गीता में निहित आध्यात्म ज्ञान

ज्ञान भक्ति और कर्म की त्रिवेणी का संगम हमें गीता में परिलक्षित होता है इसमें अर्न्तदृष्टि की शक्ति के विकास के लिए सत्य का बोध होना ओर विश्व शान्ति के लिए दिव्यदृष्टि का होना साथ ही साथ सत्य के ज्ञान से संगम होना बहुत ही विशेष रूप में दर्शाया गया हैं चंचल और अस्थायी मन को एक प्रशान्त जलाशय की भांति दर्शाया गया है जिसे स्थिर रखना जरूरी है साथ ही साथ

व्यक्ति में कल्याण की भावना का होना भी जरूरी है मनुष्य के अज्ञान व अविद्या को चेतना के विकास के द्वारा दूर करने की प्रेरणा भी दी गयी है। जो हमे पूर्वाग्रहो से मुक्त होने को बतलाता है।

गीता में योग शिक्षा

योग शिक्षा की स्थिति अंहकार का नाश करने वाली और ईश्वर के साये में रहने वाली स्थिति है। मनुष्य को योग शिक्षा के अन्तगत आत्मिक अनुशासन की प्रेरणा प्रदान की जाती है और अंहकार का नाश किया जाता है मनुष्य को सयमित जीवन जीने की प्रेरणा दी जाती है।

शैक्षिक योगदान

गीता दर्शन व्यवहारिक दर्शन है इसकी शिक्षण विधियो को नवाचारो से जोडकर और अधिक विकसित किया जा सकता है सव धर्म सदभाव विश्व एकता, नैतिकता, ज्ञान, कर्म करने की प्ररणा अनुशासन स्थापना करने में गीता का विशेष योगदान है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आत्मानंद स्वामी– गीता तत्व चिन्तन, भीलवाडा संस्कृति उत्थान, भीलवाडा।
2. उपाध्याय, आचार्य बलदेव– भारतीय दर्शन, शारदा मंदिर प्रकाशन, वाराणसी।
3. ओझा राजकिशोर– आधात्मिक क्रांति, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली।
4. गिरि, गगन देव– श्रीमद्भागवद् गीता में ज्ञान, कर्म एव भक्ति का समन्वय, ज्योति प्रकाशन, वाराणसी।
5. गुरूदत्त– श्रीमद्भागवत् गीताः एक अध्ययन, शाश्वत संस्कृति परिषद, दिल्ली।
6. परमानन्द भाई– श्रीमद्भागवद् गीता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
7. प्रभुपाद स्वामी– श्रीमद्भागवद् गीता यथा रूप, भक्ति वेदान्त बुक, ट्रस्ट बम्बई।
8. शमसुख दास स्वामी–गीता दर्पण, गीता प्रेस गोरखपुर।
9. शर्मा डा0 सरोज–उदीयभान भारतीय समाज में शिक्षा, श्याम प्रकाशन जयपुर।